International Journal of Applied Research 2016; 2(4):574-575

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR2016; 2(5): 574-575
www.allresearchjournal.com
Received: 23-04-2016
Accepted: 27-05-2016

डॉ0 आभा त्यागी
प्राचार्या वैश्य कन्या महाविधालय
समालखा (पानीपत) हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ0 आभा त्यागी
प्राचार्या वैश्य कन्या महाविधालय
समालखा (पानीपत) हरियाणा, भारत

हिन्दी काव्य मे नारी विमर्श

डॉ0 आभा त्यागी

शोध -पत्र सार
नारी ब्रहम की श्रेष्ठतम कृति है, किन्तु नर और नारी में श्रेष्ठ कौन है, यह भी एक प्रश्न उभर कर सामने आता है इस विषय पर विद्वानों में मतभेद है, किन्तु यह भी स्वीकार्य है कि नारी रचना से ही जीव एव जगत को लाभ हुआ है तथा समस्त विश्व की सभ्यता और संस्कृति के विकास में नारी का सहयोग रहा है। विकास चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र में है। वह एक अनवरत प्रक्रिया है। प्राचीन ग्रन्थों में नर हो या नारी दोनो का उल्लेख हुआ है।
जहॉ तक नर-नारी के बीच श्रेष्ठता का प्रश्न है तो नारी ही संसार की अमूल्य निधि है, सौन्दर्य है। वह कष्ट सहने में दृढ़ सात्विक मर्यादा में कटिबद्ध और धर्म परायणता में अडिग दिखायी देती है। भारतीय संस्कृति और साहित्य के अनुसार नारी और देवी मॉ पार्वती का रूप है अतः नर और नारी में नारी का ही स्थान श्रेष्ठ माना जाना उचित है। नारी की यह महानता है कि वह पुरूष को ही अपने से श्रेष्ठ मानती है उसे ही सब कुछ समझती है।
नारी चरित्र बड़ा विचित्र होता है। पिछले दो दशक से हिन्दी मे नारी विमर्श चर्चा के केन्द्र में है लेकिन यह तथ्य भी किसी से छिपा नहीं है कि नारी विमर्श देह विमर्श में तब्दील होता गया और नारी मुक्ति के प्रश्न देह मुक्ति का पर्याय बन गये। भारत के नारी विमर्श को खुलकर सॉस लेने के लिए पश्चिम से आ रहे आधुनिक विचारों की चुनौतीपूर्ण और मुक्तिकामी हवाओ की जितनी जरूरत है उससे कही ज्यादा जरूरत है पॉव टिकाने लायक और रहने लायक अपनी जमीन के समतलो, टीलों और बीहडों के आधार के प्रति सजग होने की ताकि जमीनी भटकाव उसे हाफने के लिए मजबूर न करता फिरे। पुरूषवादी समाज में नारी की हैसियत और सामाजिक रूपांतर के प्रश्न परिवार में नारी की स्थिति और रिश्तो में बँधे-घुटे-निकलते उसके सपने, उसकी तरक्की की उम्मीदे और जटिल होता उसका वर्तमान उसके तनाव, उसकी दुराशायें, उसकी काम और प्रेम की समस्यायें व आजादी, उसकी अस्मिता और इसी तरह के ढेरो प्रश्न आज नारी विमर्श का हिस्सा हो गये है।
हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के फलक पर उसके मादक एवं मोहक सौन्दर्य का मूल्यांकन अनेक विद्वानों ने किया है। आधुनिक काल में नारी अंग प्रत्यंगो का चित्रण काफी हुआ है। इसमें नारी विवश वेदना आज मानव समाज में व्याप्त है, उसे ऑखो से ओझल नही किया जा सकता इसे यों भी कहा जा सकता है कि नारी जीवन विष बेलि पर कुसुमित होते हुए किसलय की भॉति है। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त का ध्यान इस ओर गया था तभी तो उन्होने कहा है-

''अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
ऑचल में है दूध और ऑखो मे पानी ''।।

गुप्त जी मुख्यतः हिन्दु सभ्यता एवं संस्कृति के सजग गीतकार रहे हैं, उनकी मान्यता है कि मानव जीवन संन्यास से नही, अपितु संघर्ष से संचालित होना चाहिए। वह मानवता वाद के प्रबल पोषक तथा समर्थक थे। जहॉ तक आज के युग में नारी श्रृंगार वर्णन का प्रश्न है तो इस पर वैज्ञानिक विचारकों का विरोध है उनका मानना है कि वैज्ञानिको के हृदय पर कविता की छाप छोडना, विशेषकर श्रृंगार रस की पत्थर में छेद करने के समान है। यह सत्य है किन्तु पूर्ण सत्य नही, क्योकि जब तक मानव तन में हृदय का योग है, उसे स्नेह-सिक्त करने हेतु काव्य रस का पुट अति आवश्यक है। वस्तुतः मानव समाज को हृदय हीनता से बचाना काव्य का एक प्रमुख कार्य है।
शारीरिक और आत्मिक सौन्दर्य ही आर्कषण के मूलभूत तत्व है। ऐसी अवस्था मे नारी-सौन्दर्य का वर्णन जो प्राचीनकाल से चला आ रहा है वर्तमान युग मे क्यों और कैसे नही हो सकता? संसार की सभी भाषाओं का सत्साहित्य नारी-रूप, नारी चेष्टा और नारी-भाव से ओत-प्रोत है। आधुनिक युग तो नारी जागरण का भी युग है। नारी सौन्दर्य की सुन्दर अभिव्यक्ति शत-प्रतिशत हो रही है तथा आगे भी होती रहेगी क्योकि -

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता''

छायावादी कवि प्रसाद ने भारतीय नारी का आदर्श रूप प्रस्तुत कर नारी -संसार को धन्य कर दिया है-

नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग-पग तल में
पीयूष स्त्रोत-सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।

किन्तु समकालीन कविता में स्त्री के वे रूप देखने को मिलते हैं, जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं है।

भक्तिकाल में जब हम दृष्टि डालते है तो देखते हैं कि कृष्ण काव्य नारी पात्रों से व्याप्त हैं कृष्ण काव्य के नारी पात्रो में राधा, गोपियॉ, यशोदा, द्रौपदी, रूक्मिणी, सत्यभामा आदि प्रमुख है सूर ने राधा का जगत की प्रतिपादिका शक्ति के नाम से वर्णन किया है। सूरदास ने राधा के चरित्र को विविध रूपों में प्रस्तुत किया है। वह कृष्ण की सखी, परकीया और स्वकीया भी है, वह मानिनी है, साथ ही दारूण मानिनी भी। वह उनकी प्रेम की एकान्त साधिका और सच्ची प्रेमिका है, तो उनकी अर्धागिनी भी।

नायिका भेद के अनुसार नायिका तीन प्रकार की होती है - स्वकीया, परकीया और सामान्य। अन्य भेद व्यवस्था, दशा आदि के अनुसार होते है। इनमें स्वकीया मात्र स्वंय की परिणीत पत्नी होती है और पर की पराई कन्या या पत्नी हो सकती है परन्तु अनौचित्य और सामाजिक तिरस्कृति के कारण परकीया केवल अनदा प्रदर्शित की जाती है सामान्या, गनिका, वीरांगना वार विलासिनी आदि हो सकती है। जिस तरह मृच्छकटिक की नायिका वसन्त सेना गणिका प्रवृति की है अब प्रश्न उठता है कि राधा अपरिणीता होने से मात्र प्रेमाभिसिक्त प्रेयसी या परकीया हो सकती है स्वकीया नही। केवल उन लोगो की दृष्टि मे जो कृष्ण को परबल ओर राधा को उनकी उद्भाविका शक्ति (माया) के रूप में मानते हैं। वही लौकिक दृष्टि लीला विलास की दृष्टि से परकीया और वस्तु स्थिति में स्वकीया मानते हैं यह उभय स्थिति केवल राधा के साथ ही संभव है लोक में नही।

सूरदास ने राधा को जयदेव, विद्यापति और चण्डीदास की तरह पहले ही से वय प्राप्त यौवन प्राप्त नायिका के रूप में चित्रित नही किया है, राधा में सर्वस्व त्याग की भावना को दर्शाया है उन्होने हिन्दू पत्नी की भॉति अपने प्रेमी के समस्त दोषो को अपने ऊपर ओट लिया है।

कृष्ण काव्य में पतिव्रता द्रोपदी का चरित्र पारम्परिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित हुआ है। कृष्णायन, जयभारत आदि काव्यों में द्रौपदी के उत्कृष्ट पातिव्रत्य का चित्रण हुआ है वह पॉचो पतियो के प्रति पातिव्रत्य धर्म का निर्वाह करती है। जयद्रथ, कीचक आदि के प्रसंग में उसके दृढ़ पतिव्रत धर्म को देखा जा सकता है। स्वाभिमानी नारी के रूप में वह समय समय पर शान्ति प्रिय युधिष्ठर तथा अन्य पाण्डवों को अपने कटु व्यंग्यात्मक वचनों से अन्याय का विरोध करने को उत्तेजित करती दिखती है। युधिष्ठर के प्रति कहे गये उसके ये वचन पर्यापत प्रबोधक हैं-

करत प्रवाहित नहि सरित काहे ये धनु बाण?
शोभा हित धारव इनहि, क्षात्र धर्म अपमान?

रूक्मिणी और सत्य भामा कृष्ण की पत्नियों के रूप में कृष्ण-काव्य में मिलता है परन्तु गौण रूप में।

कृष्णायन में रूक्मिणी का भाव-सौन्दर्य और क्रिया सौन्दर्य ही नही अपितु रूप-सौन्दर्य भी अच्छा चित्रित है। रूक्मिणी एवं कृष्ण की श्रृंगार चेष्टाओ को कही स्थान तक नही दिया है किन्तु मर्यादावाद में उन्होने तुलसीदास की मर्यादा भी पार कर दी है।

इस प्रकार कृष्ण काव्य के अतिरिक्त रामकाव्य में भी नारी के मर्यादिक रूप को ही आकार दिया है। ये नारी पात्र युग की समस्याओं के प्रति सचेत एवं सचेष्ट हैं।

संदर्भ सूचीं

1. डॉ0 वीणा शर्मा - आधुनिक हिंदी महाकाव्य पृष्ठ 9
2. डॉ0 हुकुम सिंह - हिन्दी साहित्य में राधा पृष्ठ 44
3. सूर सागर - प्रथम खण्ड पृष्ठ 497
4. डॉ0 श्याम बाला गोयल - भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण की नारी की भावना पृष्ठ 238
5. ऋग्वेद -ऋक सूक्त
6. जयशंकर प्रसाद - कामायनी श्रद्धा सर्ग